



पृथ्वीराज चौहानकालीन सिक्कों का अध्ययन

नीलम शर्मा, सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, राजकीय कॉलेज, रूपनगढ़

सारांश

भारतीय इतिहास में चौहान वंश का महत्वपूर्ण स्थान है। इस वंश के प्रमुख शासक पृथ्वीराज चौहान ने बारहवीं शताब्दी में उत्तर भारत के राजनीतिक एवं सैन्य इतिहास में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उनके शासनकाल से संबंधित सिक्कों का अध्ययन तत्कालीन राजनीतिक सत्ता, आर्थिक व्यवस्था, व्यापारिक गतिविधियों तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में मुद्राशास्त्र का विशेष महत्व है, क्योंकि सिक्के तत्कालीन शासन व्यवस्था, धातु के उपयोग, मुद्रा प्रचलन तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतीकों से संबंधित प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। पृथ्वीराज चौहानकालीन सिक्कों का अध्ययन करते समय उनके स्वरूप, धातु, भार, निर्माण तकनीक, प्रतीक चिह्नों और अभिलेखों का विश्लेषण आवश्यक है। इन सिक्कों के माध्यम से चौहानकालीन आर्थिक गतिविधियों, स्थानीय व्यापार, राजनीतिक प्रभुत्व तथा समकालीन राजवंशों के साथ संबंधों की जानकारी प्राप्त करने की संभावनाएँ सामने आती हैं। हालांकि, इस काल के सिक्कों की पहचान और उनके निश्चित काल निर्धारण में ऐतिहासिक स्रोतों, पुरातात्विक साक्ष्यों तथा उपलब्ध मुद्राशास्त्रीय अध्ययनों का तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य पृथ्वीराज चौहानकालीन सिक्कों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना, उनकी प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करना तथा तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के पुनर्निर्माण में उनकी उपयोगिता का मूल्यांकन करना है। इसके अंतर्गत उपलब्ध सिक्कों, ऐतिहासिक अभिलेखों और संबंधित शोध साहित्य के आधार पर उनके महत्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा। इस प्रकार, पृथ्वीराज चौहानकालीन सिक्कों का व्यवस्थित अध्ययन न केवल चौहान वंश के इतिहास को समझने में सहायक है, बल्कि मध्यकालीन उत्तर भारत की मुद्रा प्रणाली और ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के लिए भी महत्वपूर्ण है।